8 SEP 2019

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-XIV/VI (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/19(N-M)-HL-**HL14/6**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): संदीप कुमार पटेल

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 7/09/19

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2019] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2019]:

0	8	6	7	9	9	6

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): [signature]

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) बिलग जनि मानहु, ऊधो प्यारे!
वह मथुरा काजर की कोठरि जे आवहिं ते कारे।।
तुम कारे, सुफलकसुत कारे, कारे मधुप भँवारे।
तिनके संग अधिक छवि उपजत, कमलनैन मनिआरे।।
मानहु नील माट तें काढ़े लै जमुना ज्यों पखारे।
ता गुन स्याम भई कालिंदी सूर स्याम गुन न्यारे।।

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश वात्सल्य एवं श्रृंगार रस सम्राट 'सूरदास' की रचना 'भ्रमरगीत सार' से है जो उनकी रचना सूरसागर का ही एक भाग है।

प्रसंग- भ्रमरगीत के माध्यम से कवि ने गोपियों की मनः स्थितियों का चित्रण किया है कि कैसे वह मथुरा को उलाहना दे रही हैं।

व्याख्या- गोपियाँ ऊधव को उलाहना देते हुये कहती हैं कि मथुरा काजल की कोठरी के समान है क्योंकि वहाँ जो भी रहता है काला हो जाता है। ऊधव, अक्रूर, कृष्ण सभी काले हैं। कृष्ण के स्पर्श से सर्प भी काला हो गया एवं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

यमुना भी काली हो गयी थी।

विशेष -

(1) भ्रमरगीत परंपरा का भारतीय साहित्य जगत में प्रयोग कालिदास की रचनाओं से शुरू हो गया था।

(2) सूरदास ने इस परंपरा में नई संभावनाएँ जैसे सगुण - निर्गुण विवाद छेड़कर इसे महत्वपूर्ण बनाया है।

(3) उत्प्रेक्षा एवं उपमा अलंकार का सुंदर प्रयोग।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) सोइ रावन कहुँ बनी सहाई। अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई।।
अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा।।
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन। बोला बचन पाइ अनुसासन।।
जौं कृपाल पूँछिहु मोहिं बाता। मति अनुरूप कहौं हित ताता।।
जो आपन चाहै कल्याना। सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना।।
सो पर नारि लिलार गोसाईं। तजउ चउथि के चंद कि नाईं।।
चौदह भुवन एक पति होई। भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई।।
गुन सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहइ न कोऊ।।
दोहा: काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत पद महान कवि 'तुलसीदास' की अमर रचना रामचरितमानस के सुंदरकांड से अवतरित है।

प्रसंग - प्रस्तुत प्रसंग में बिभीषन रावण को अपनी भूल सुधारने का उपदेश दे रहे हैं।

व्याख्या - सभी मंत्रिगण रावण की प्रशंसा में लगे थे तभी बिभीषण आते हैं एवं अपने भाई की अनुमति लेकर उनको उपदेश देते हैं कि यदि आप अपनी भलाई चाहते हैं, अनेको प्रकार के यश प्राप्त करना चाहते हैं, तो दूसरे की स्त्री को छोड़ दीजिए क्योंकि राम तीनो लोकों के स्वामी हैं, लोभ के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वश में आकर उनसे वैर उचित नहीं है। तुलसी कहते हैं, काम, क्रोध, घमंड, लालच सभी नरक के कारण हैं इन सबको छोड़कर रघुबीर को भजने की सलाह सेत देते हैं।

विशेष -

① विभीषण के माध्यम से रावण को सही सलाह देकर राजव्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रयोग किया गया है जहाँ तुलसी कहते हैं -

" सचिव वैद गुरु तीनि जो, प्रिय बोलहिं भय आस।
राज, धर्म तन तीनि कर, होहिं बेगहिं नास।"

② अवधी भाषा में संस्कृत शब्दावली का सुंदर प्रयोग

③ आचार्य शुक्ल के अनुसार, यह लोकमंगल की साधनावस्था का काव्य है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) दसरत्थ के दानि-सिरोमनि राम, पुरान प्रसिद्ध सुन्यो जसु मैं।

नरनाग सुरासुर जाचक जो तुम सों मनभावत पायो न कैं।

'तुलसी' कर जोरि करै बिनती जो कृपा करि दीनदयाल सुनैं।

जेहि देह सनेह न रावरे सों अस देह धराइ कै जाय जियैं।।

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश समन्वय के महान कवि तुलसीदास की रचना कवितावली से अवतरित है।

प्रसंग- प्रस्तुत प्रसंग में तुलसी प्रभु श्रीराम की बिनती कर रहे हैं कि वही एकमात्र आधार हैं।

व्याख्या - तुलसी कहते हैं श्री राम दसरथ के पुत्र महादानी हैं, ऐसा मैंने पुराणों में सुना है, नर-नारि, जीव, सुर-असुर सभी उनकी भक्ति करते हैं। मैं हाथ ~~आरु~~ जोर कर बिनती करता हूँ कि हे दीनदयाल मेरा उद्धार कीजिये।

बिशेष-

① तुलसी का महत्व सिर्फ रामचरितमानस की वजह से नहीं बल्कि कवितावली

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में उनके प्रगतिशील विचारों को लेकर भी है।

(2) ब्रज भाषा का सुंदर प्रयोग साथ में तत्सम शब्दों को ब्रज भाषा के अनुरूप प्रयोग भी द्रष्टव्य है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) नहिं परागु, नहिं मधुर मधु नहिं विकासु इहिं काल।
अली, कली ही सौं बंध्यौं, आगै कौन हवाल।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ- प्रस्तुत दोहा रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कलात्मक रचयिता 'बिहारी' की एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' से अवतरित है।

प्रसंग- प्रतीकात्मकता के माध्यम से बिहारी राजा को संदेश दे रहे हैं।

व्याख्या- बिहारी ने इस प्रतीकात्मक दोहे के माध्यम से कहना चाहा है कि अभी तो पुष्प में रस भी नहीं है, न ही विकसित हुआ है फिर भी भँवरा उससे बंध गया है तो आगे इसका हाल क्या होगा। अर्थात् राजा अपनी यौवन नारी के प्रति अभी से इतने आकर्षित हैं और सभी राज-कार्य छोड़ दिये हैं तब आगे उनका हाल क्या होगा।

विशेष-
① बिहारी की समाहार क्षमता एवं शिल्प में सामासिकता अद्भुत है जहाँ वे दोहे में 'गागर में सागर'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भर देते हैं।

(2) अन्योक्ति अलंकार का अनुपम उदाहरण

(3) राजा को उपदेशात्मक दोहा के माध्यम से बिहारी अपनी सामाजिक संवेदना का परिचय दे रहे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) संसार में कविता अनेकों क्रांतियाँ है कर चुकी,
मुरझे मनों में वेग की विद्युत्प्रभाएँ भर चुकी।
है अन्ध-सा अन्तर्जगत कवि-रूप सविता के बिना,
सद्भाव जीवित रह नहीं सकते सु-कविता के बिना।।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त की रचना 'भारत - भारती' से ली गई हैं।

प्रसंग - कविता के उद्देश्य एवं कवि को सलाह देते हुये कवि अपने विचार रख रहे हैं।

व्याख्या - कवि कविता की प्रशंसा में कहते हैं कि काव्य से संसार में अनेकों क्रांतियाँ हुई हैं, निष्क्रिय जनता में कविता ने नई ऊर्जा भरने में सहायता की है। कवि रूपी सूर्य उजाले के बिना यह जगत अंधकारमय है तथा जीवन में सद्गुण बिना अच्छी कविता के नहीं रह सकते।

विशेष - ① कविता का मानव जीवन में महत्व का प्रतिपादन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(2) आचार्य शुक्ल ने 'कविता क्या है' निबंध में कविता के महत्व को मानव जीवन के लिये बताया था।

(3) आचार्य द्विवेदी भी कहते हैं कि, 'साहित्य का एकमात्र लक्ष्य मनुष्य है।'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) "पीड़ित, शोषित, अपमानित जनमानस के दुःख से जितना सरोकार कबीर का है, उतना भक्तिकाल के किसी अन्य कवि का नहीं।" इस कथन की मीमांसा कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर जन्म से निम्न वर्ग में रहे थे एवं नाथ परंपरा में दीक्षित हुये इसके अलावा श्रुतियों के द्वारा उन्होंने अपने जीवन में विभिन्न शिक्षा को ग्रहण किया। आम जन मानस से जुड़े रहने के कारण समस्त भक्तिकालीन कवियों में उनमें सबसे अधिक संवेदनशीलता निम्न वर्गों एवं उसमें व्याप्त विद्रूपताओं के प्रति है।

कबीर हिन्दी साहित्य की एक हजार वर्षों की परंपरा में अकेले ऐसे कवि हैं जिन्होंने सामाजिक समस्याओं को ~~समझा~~ समझा एवं उन पर तीखे प्रहार किये। उनका अक्खड़ स्वभाव समाज में व्याप्त असमानताओं पर लगातार चोट करने के लिये उन्हें प्रेरित करता था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर ने अपने काव्य में निम्न वर्णों के खिलाफ होने वाले जातिगत भेदभाव की आलोचना की तथा तार्किक दृष्टि से प्रश्न भी उठाये। ब्राह्मणों पर व्यंग्य करते हुये वे कहते हैं -

"जो तो बांभन बंभनी की जाया,
आन बाट ह्वै काहे नहीं आया।"

कबीर ने जाति से ऊपर व्यक्ति के ज्ञान, योग्यता को महत्व दिया तथा दूसरों ~~कर~~ को इसके लिये उपदेश भी दिया।

"जाति न पूँछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का पड़ा रहन दो म्यान।"

कबीर की संवेदना हमेशा पीड़ित, शोषित एवं अपमानित जनता के प्रति रही। यही कारण है कि इन्होंने अपने काव्य में उनके खिलाफ होने वाले अत्याचारों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का विरोध किया। धार्मिक आस्थाओं एवं आडंबरों को वे असमानता एवं शोषण का सबसे बड़ा कारण मानते थे अतः उन्होंने हिन्दू एवं मुस्लिम दोनों धर्मों के आडंबरों का विरोध किया। निम्नलिखित उदाहरण द्रष्टव्य हैं –

(1) पाहन पूजे हरि मिलें तो मैं पूजूँ पहाड़।
तातें तो चाकी भली पिस खाय संसार।

(2) काँकड़ पाथर जोड़ के मस्जिद लई बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।

कबीर का हृदय समाज में व्याप्त असमानताओं एवं विद्रूपताओं के प्रति हमेशा द्रवित रहता था। उनका ये कथन कि 'दुखिया दास कबीर है, जागे अरु रोवे' पुष्टि करता है कि निम्न वर्गों एवं शोषितों के प्रति

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गहरी संवेदना इनमें विद्यमान थी।

समाधान के स्तर पर वे सभी को निर्गुण की उपासना की शिक्षा देते हैं ताकि समानता स्थापित की जा सके।

" निर्गुण राम जपहु रे भाई।"

इस प्रकार कबीर एक समाज सुधारक थे जो पीड़ितों एवं शोषितों के प्रति हमेशा चिंतित रहे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रीय-स्वाधीनता-आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में 'राम की शक्तिपूजा' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छायावाद के सशक्त हस्ताक्षर 'निराला' ने छायावादी मूल्यों के अनुरूप स्वातंत्र्य चेतना' पर हमेशा महत्व दिया। इसी का अगला चरण उनकी प्रमुख रचना 'राम की शक्ति पूजा' में दिखाई देता है।

आलोचकों का आरोप है कि जब भारत में राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन उफान पर था तब 'निराला' आध्यात्मिक एवं भक्तिपरक रचना के रूप में 'राम की शक्ति पूजा' क्यों लिखते हैं। किंतु सूक्ष्म विवेचन से स्पष्ट है कि यह कविता भले ही बाहरी आवरण में आध्यात्मिक हो किंतु आंतरिक स्तर पर स्वाधीनता आंदोलन एवं स्वतंत्रता के मूल्य को स्थापित करती है।

दरअसल 'राम की शक्ति पूजा' के 'राम' गांधी के प्रतीक हैं। युद्ध

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

में राम निराश एवं असहाय हैं उसी प्रकार गांधी का अहिंसा एवं सत्याग्रह का आंदोलन विफल हो रहा था क्योंकि अंग्रेज सरकार दमन के रास्ते पर उतर आई थी। प्रतीकात्मक अर्थ में 'रावण' अंग्रेज सरकार है एवं शक्ति अंग्रेजों के पास है। राम चिंता करते हैं -

"है अन्याय जिधर उधर शक्ति।"

यह वेदना सिर्फ राम की नहीं बरन् भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की थी। अतः निराला कविता के माध्यम से आंदोलन को एक नयी दिशा देना चाहते थे और शक्ति की मौलिक कल्पना का सुझाव दे रहे थे।

यह मौलिक कल्पना दरअसल अहिंसक रास्ते को छोड़कर शक्ति एवं विरोध एवं क्रांति का रास्ता था। उस

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समय जनता समाजवादी विचारों की तरफ बढ़ रही थी एवं निराला भी इससे अछूते नहीं थे। वे कहते हैं-

"शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन।"

इस प्रकार 'राम की शक्ति पूजा' स्वायत्तता आंदोलन के मूल्यों को स्थापित करती है तथा एक वैकल्पिक मार्ग प्रदान करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

में राम निराश एवं असहाय हैं उसी प्रकार गांधी का अहिंसा एवं सत्याग्रह का आंदोलन विफल हो रहा था क्योंकि अंग्रेज सरकार दमन के रास्ते पर उतर आई थी। प्रतीकात्मक अर्थ में 'रावण' अंग्रेज सरकार है एवं शक्ति अंग्रेजों के पास है। राम चिंता करते हैं -

"है अन्याय जिधर उधर शक्ति।"

यह वेदना सिर्फ राम की नहीं वरन् भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की थी। अतः निराला कविता के माध्यम से आंदोलन को एक नयी दिशा देना चाहते थे और शक्ति की मौलिक कल्पना का सुझाव दे रहे थे।

यह मौलिक कल्पना दरअसल अहिंसक रास्ते को छोड़कर शक्ति एवं विरोध एवं क्रांति का रास्ता था। उस

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समय जनता समाजवादी विचारों की तरफ बढ़ रही थी एवं निराला भी इससे अछूते नहीं थे। वे कहते हैं -

"शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन।"

इस प्रकार 'राम की शक्ति पूजा' स्वाधीनता आंदोलन के मूल्यों को स्थापित करती है तथा एक वैकल्पिक मार्ग प्रदान करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'सूर को उपमा देने की झक सी चढ़ जाती है और वे उपमा पर उपमा, उत्प्रेक्षा पर उत्प्रेक्षा कहते चले जाते हैं।'- इस कथन को ध्यान में रखते हुए सूरदास की अलंकार-योजना पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सूरदास की भाषा एवं अलंकार शास्त्र की प्रशंसा करते हुये भी शुक्ल जी उन पर आक्षेप लगाते हैं कि वे उपमा पर उपमा करते चले जाते हैं।

दरअसल सूरदास ने अपने काव्य में अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये हैं जिससे अलंकारों की अधिकता से काव्य में विधान पैदा हुआ है। सूरदास ने अनेक ऐसी उपमाएँ दी हैं जो अनुपातिक दृष्टि से उचित प्रतीत नहीं होती। जैसे कृष्ण की रोटी की तुलना पृथ्वी से करना।

इसी तरह कुछ उदाहरणों में एक ही उपमा एक से अधिक पदों में प्रयुक्त हुई है। जैसे -

" मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै
जैसे उड़ि जहाज को पंछी फिरि जहाज
पे आवै।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

किंतु इस दोष के निम्नलिखित कारण भी हो सकते हैं जैसे -

(1) सूर अंधे थे अतः पुनः पदों को पढ़ नहीं सकते थे।

(2) उनका विभाव पक्ष सीमित था, केवल कृष्ण - राधा एवं गोपियों तथा गोकुल - मथुरा के प्रसंग।

अगर कुछ उदाहरणों को छोड़ दिया जाये तो सूर का काव्य अलंकारों के सुंदर प्रयोग का अनुपम उदाहरण है। आचार्य द्विवेदी के शब्दों में "अलंकार शास्त्र मानों हाथ जोड़कर सूर के पीछे खड़ा रहता हो।"

उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का अद्भुत प्रयोग उन्होंने किया है।

" निरखत अंग स्याम सुंदर के बार- बार लावति छाती।
लोचन जल कागद मसि मिलि के ह्वै गई स्याम स्याम की पाती।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार यदि सूर के काव्य के वृद्ध भाग को छोड़ दिया जाये तो यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उनका काव्य हिन्दी साहित्य में अलंकारशास्त्र की दृष्टि से महानतम है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'राम की शक्तिपूजा' में निहित द्वंद्वात्मकता का उद्घाटन करते हुए उसके महत्त्व का निरूपण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) बिलैती कपड़ा के पिकेटिंग के जमाने में चानमल-सागरमल के गोला पर पिकेटिंग के दिन क्या हुआ था, सो याद है तुमको बालदेव? चानमल मड़बाड़ी के बेटा सागरमल ने अपने हाथों सभी भोलटियरों को पीटा था; जेहल में भोलटियरों को रखने के लिये सरकार को खर्चा दिया था। वही सागरमल आज नरपतनगर थाना कांग्रेस का सभापति है।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश 'फणीश्वर नाथ रेणु' के सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास 'मैला आंचल' से लिया गया है।

प्रसंग - प्रस्तुत गद्यांश में बालदेव को बाबनदास कांग्रेस के सभापति का प्रसंग बता रहा है।

व्याख्या - बाबनदास बालदेव को अतीत याद कराते हुये कहता है कि जब विदेशी कपड़ा के बहिष्कार के समय सागरमल ने सभी कार्यकर्त्ताओं को पीटा था, किंतु जेल में इसने सरकार को खर्चे के लिये पैसा भी दिया था ताकि कार्यकर्त्ताओं को रख जा सके। इसके बावजूद वही सागरमल आज कांग्रेस का सभापति बन गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विशेष -

① राजनीति की विद्रूपता को उकेरा गया है जहाँ धनवान बड़े पदों पर अनैतिक कार्य करके भी पहुँच जाता है।

② महाभोज एवं राग दरबारी में इसी समस्या को दिखाया गया था।

③ देशज शब्दों का प्रयोग

④ व्यंग्य शैली

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) तुम्हारे दुख की बात भी जानती हूँ। फिर भी मुझे अपराध का अनुभव नहीं होता। मैंने भावना में एक भावना का वरण किया है। मेरे लिये वह संबंध और सब संबंधों से बड़ा है। मैं वास्तव में अपनी भावना से प्रेम करती हूँ जो पवित्र है, कोमल है, अनश्वर है...।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यावतरण हिन्दी के आधुनिक भावबोध के प्रमुख नाटककार 'मोहन राकेश' के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से अवतरित है।

प्रसंग - प्रस्तुत गद्य में मल्लिका अपनी माँ अंबिका को अपने प्रेम के महत्व के बारे में बता रही है।

व्याख्या - मल्लिका कहती है तुम्हें मेरी चिंता है इसलिये तुम दुखी हो, माँ। किंतु मैंने अपनी भावना को चुना है अतः मुझे अपराध का अनुभव नहीं होता। मैं अपनी भावनाओं से ही प्रेम करती हूँ जो मेरे लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे पवित्र, कोमल एवं कभी न मिटने वाली हैं।

विशेष - ① छायावादी या प्लेटोनिक किस्म

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेलः helpline@groupdrishti.com, वेबसाइटः www.drishtiIAS.com
फेसबुकः facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटरः twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

का प्रेम जहाँ भावनाओं की प्रधानता।

(2) मल्लिका का औदात्य उसे प्रमुख चरित्र बनाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अधिकार-सुख कितना मादक और सारहीन है। अपने को नियामक और कर्त्ता समझने की बलवती स्पृहा उससे बेगार कराती है। उत्सवों में परिचारक और अस्त्रों में ढाल से भी- अधिकार लोलुप मनुष्य क्या अच्छे हैं? उंह। जो कुछ हो, हम साम्राज्य के एक सैनिक हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश महान ~~उपन्यास~~ नाटक-कार 'जयशंकर प्रसाद' के नाटक 'स्कंदगुप्त' से अवतरित है।

प्रसंग- जीवन की निरर्थकता से विक्षिप्त स्कंदगुप्त अपने सुख एवं कर्त्तव्यों से दुखी है।

व्याख्या- स्कंदगुप्त कहता है अधिकारों को ~~भोजन~~ भोगने का सुख बहुत ही मादक होने के बावजूद निरर्थक है। जब मनुष्य खुद को परिस्थितियों का निमित्त समझ लेता है तो वह अनैतिक कार्य करता है। ऐसे मनुष्य अच्छे नहीं है। अगले ही पल वह द्वन्द में आकर सोचता है जो भी हो हम मात्र सैनिक है अर्थात् ये मेरा कर्तव्य है।

विशेष- ① जीवन के प्रति निरर्थकता

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बोध एवं आध्यात्मिक शांति की तलाश, प्रसाद के समरसतावादी दर्शन के अनुकूल।

(2) स्कंदगुप्त की यह मनोदशा निम्न वाक्य में स्पष्ट होती है –

"मैं बौद्धों का निर्वाण, योगियों की समाधि और पागलों की संपूर्ण विस्मृति एक साथ चाहता हूँ।"

(3) कथ्य एवं पात्र के अनुरूप भाषा का प्रयोग।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) जीवन में एक समय प्रयत्न की असफलता मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन नहीं है। जीवन का हम अन्त नहीं देख पाते, वह निस्सीम है। वैसे ही मनुष्य का प्रयत्न और चेष्टा भी सीमित क्यों हो? असामर्थ्य स्वीकार करने का अर्थ है, जीवन में प्रयत्नहीन हो जाना, जीवन से उपराम हो जाना।

~~संदर्भ- प्रस्तुत यह गद्यांश हिन्दी के सशक्त नाटककार जयशंकर प्रसाद के नाटक 'स्कंदगुप्त'~~

संदर्भ- यह गद्यांश महान उपन्यासकार प्रगतिवादी लेखक यशपाल के 'दिव्या' से अवतरित है।

प्रसंग- मारिश, दिव्या को जीवन में आगे बढ़ने के लिये प्रोत्साहित कर रहा है।

व्याख्या- मारिश कहता है कि यदि एक बार कोई असफल हो जाये तो जीवन समाप्त नहीं हो जाता। वह तो अनंत है। इसलिये लगातार इच्छाएँ और उनको पाने के प्रयास करते रहना चाहिये। यदि हार मान ली तो जीवन से अलग हो जाना है।

विशेष- ① जीवन में प्रयास करने पर

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

बल

(2) भोगवादी दृष्टिकोण - लोकायत / चार्वाक दर्शन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) कोई पीछे नहीं है, यह बात मुझमें एक अजीब किस्म की बेफिक्री पैदा कर देती है। लेकिन कुछ लोगों की मौत अन्त तक पहेली बनी रही है; शायद वे जिन्दगी से बहुत उम्मीद लगाते थे। उसे ट्रैजिक भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि आखिरी दम तक उन्हें मरने का अहसास नहीं होता।

संदर्भ- यह गद्यावतरण मन्नू भंडारी के राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से लिया गया है।

प्रसंग- मन्नू भंडारी मौत के ट्रैजिक अंत एवं इससे उत्पन्न वेदना के बारे में बता रही हैं।

व्याख्या- जब कोई चिंता न करने वाला हो अर्थात व्यक्ति अकेला हो तो वह बेफिक्र एवं लापरवाह हो जाता है.। लेकिन कुछ लोग अपने जीवन में बहुत कुछ चाहने की कोशिश में ट्रैजिक अंत को प्राप्त करते हैं।

विशेष-

1. भाषा प्रवाह एवं शब्दों का उपयुक्त प्रयोग
2. व्यंग्य शैली

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) क्या आप कतिपय आलोचकों के इस मत से सहमति रखते हैं कि गोदान मनुष्यों की नहीं मनुष्य की कथा है? अपना मत प्रकट करते हुए होरी की चारित्रिक विशेषताओं को रेखांकित कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'गोदान' प्रेमचंद का सर्वोत्कृष्ट उपन्यास है जिसमें वे आदर्शवाद की केंचुल से बाहर निकलकर परम यथार्थ की अभिव्यक्ति कर भारतीय समाज के सम्मुख 'होरी' का चरित्र प्रदर्शित करते हैं जो केवल 'होरी' नहीं बल्कि भारतीय किसान का प्रतिनिधि है।

वैसे तो 'गोदान' में लगभग सभी ~~समस्यो~~ समस्याओं जैसे पीढ़ी संघर्ष (गोबर- होरी), बेमेल विवाह (रूपा), दलित समस्या (सिलिया), बेगार समस्या, मजदूरों की समस्या, पत्रकारिता का विकृत चरित्र (ओंकारनाथ) आदि को चित्रित किया गया है किंतु गोदान की केंद्रीय एवं मूल समस्या 'किसान की समस्या' है जो होरी के माध्यम से सामने आई है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

होरी की कथा को आधार बनाते हुये कुछ आलोचक गोदान को 'मनुष्य की कथा' कहते हैं। होरी की चारित्रिक विशेषताओं के संदर्भ में भी इसे समझा जा सकता है।

होरी का मूलत: चरित्र समझौतावादी है जो उसके ट्रेजिक अंत का कारण भी बनता है। वह मानता है कि उसकी समस्याएँ उसके पूर्व जन्मों का फल है अत: विद्रोह की चेतना उसके मन में नहीं पनपती। प्रेमचंद ने होरी के माध्यम से ~~यह समस्या~~ लगभग हर भारतीय मध्य एवं निम्न वर्ग की इस समस्या को उठाया है।

होरी खेती को मरजाद मानता है। यह जानते हुये भी कि खेती में लाभ नहीं है वह यथास्थितिवादी होकर खेती को नहीं छोड़ना चाहता।

" जो दस रुपये का भी नौकर है वह हमसे अच्छा खाता पहनता है। फिर भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

खेती को घोड़ा तो नहीं जाता। खेती में जो मरज़ाद है वही नौकरी में तो नहीं।"

होरी धर्म एवं आडंबर में आस्था रखता है। वह धर्म के पीछे छिपे शोषणमूलक विचारधारा को नहीं समझता है अत: ब्राह्मण के कर्ज को वह किसी भी हालत में उतारना चाहता है।

"इस खाल इस रिन से गला छूटे तो दूसरी ज़िंदगी हो।"

होरी की कथा दरअसल प्रत्येक आम भारतीय किसान की कथा है। अत: इसे मात्र 'मनुष्य की कथा' कहना तार्किक प्रतीत नहीं होगा बल्कि गोदान अपने देशकाल को लाँघती हुई सार्वकालिकता के गुण को ग्रहण करती है। यही कारण है कि कुछ समीक्षक गोदान को 'ग्रामीण जीवन का प्रतिनिधि' उपन्यास भी मानते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'भारत-दुर्दशा' नाटक के रचना-उद्देश्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतेंदु हरिश्चंद्र जिस समय रचना कर रहे थे वह नवजागरण की चेतना का समय था। सामाजिक सुधार आंदोलन भारतीयों को कुप्रथाओं को छोड़कर आधुनिक होने की शिक्षा दे रहे थे अतः साहित्य में भी यह समाज सुधार की चेतना केन्द्र में थी।

भारत-दुर्दशा के माध्यम से लेखक भारत की दुर्दशा के कारणों की गहन पड़ताल करता है एवं उसको समाज के सम्मुख प्रदर्शित करता है। भारतेंदु ने तत्कालीन दुर्दशा के कारणों की पहचान की है। जैसे मदिरा, भय, अंधकार, आलस, लोभ आदि को उन्होंने प्रतीकात्मक माध्यम से भारत दुर्दशा का कारण माना है। आलस की व्यंगपूर्ण आलोचना करते हुये

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वे कहते हैं—

"दुनिया में हाथ पैर हिलाना नहीं अच्छा।
मर जाना पै उठ के कहीं जाना नहीं अच्छा।"

इसी प्रकार के अंग्रेजों के राज में होने वाले धन बहिर्गमन की चिंता से भी परेशान है और भारत की दुर्दशा में इसे एक कारण मानते हैं—

"अंगरेज राज सुख साज सब पर भारी
पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी।"

भारतेन्दु ने समस्याओं की जड़ का एक अन्य कारण बुद्धिजीवियों की निष्क्रियता को भी बताया है।

इसके अलावा वे समाधान के संकेत भी देते हैं। 'दूसरे देवी' के माध्यम से वे कहना चाहते हैं कि विदेशी विज्ञान को पढ़कर उन्नति की जा सकती है।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wr anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उनकी एक अन्य कविता में भी यही दृष्टांत प्रकट हुआ है -

"बनै वस्तु कल की इतै मिटै दीनता खेद।"

इस प्रकार भारतेंदु अपनी रचना के माध्यम से भारत की दुर्दशा एवं उसका समाधान जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेलः helpline@groupdrishti.com, वेबसाइटः www.drishtiIAS.com
फेसबुकः facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटरः twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) ''महाभोज' में चित्रित यथार्थ आदर्शोन्मुख यथार्थ है।' इस मत के संदर्भ में 'महाभोज' उपन्यास पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महाभोज भारतीय साहित्य में लिखे गये कुछेक राजनीतिक उपन्यासों जैसे 'राग दरबारी' की परंपरा में शामिल होता है। इसके संदर्भ में कुछ आलोचक मि. सक्सेना के व्यक्तित्वांतरण को आदर्श की स्थिति मानते हैं।

गौरतलब है कि महाभोज में चित्रित यथार्थ वास्तविक है। राजनीतिक स्वार्थपरायणता, दलितों का शोषण, ~~मीडि~~ पत्रकारिता का बिकाऊपन 'आज का सच है जो महाभोज में चित्रित हुआ है।

राजनीति में अवसरवाद हावी रहता है, यही अवसरवाद नेताओं को 'बिसू की मौत' से प्राप्त होता है जब वे हरिजनों की सहानुभूति लेकर वोट प्राप्त करना चाहते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपन्यास में व्यक्त दलितों की मौत तत्कालीन बेलछी कांड से प्रेरित है जो भारत का विद्रूप यथार्थ है।

हालाँकि कुछ आलोचकों ने मि. सक्सेना में क्रांति चेतना के प्रवाह को महाभोज में आदर्श से प्रेरित माना है। किंतु ध्यान से गौर करें तो पता चलता है कि यह यथार्थ वास्तव में दुर्लभ यथार्थ कहा जा सकता है जिसके लिये उपन्यास में कई परिस्थितियाँ जिम्मेदार थीं। उपन्यास का समर्पण भी इसी क्रांति चेतना को समर्पित है -

" दुर्निवार भरी उस खतरनाक लपकती अग्नि लीक के लिये जो केवल बिन्दु और बिंदा तक होकर ही नहीं रुकी रहती।"

यही अग्नि लीक मि. सक्सेना

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

में पहुँचती है और इनका व्यक्तित्वांतरण हो जाता है।

स्पष्ट है कि भले ही महाभोज का यथार्थ सुलभ यथार्थ न हो किंतु यह आदर्शोन्मुख भी नहीं है वरन् दुर्लभ यथार्थ है।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wri anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

7. (क) भारत के संपूर्ण गाँवों का प्रतिनिधित्व करता 'मेरीगंज' जिस रूप में 'मैला आँचल' में व्यक्त हुआ है, वह रूप गांवों की नारकीय स्थिति और जन-चेतना के दुष्प्रभावों का कलात्मक यथार्थ है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में 'मैला आँचल' उपन्यास का परीक्षण कीजिये। 20

मैला आंचल भारतीय हिन्दी साहित्य में प्रतिनिधि आंचलिक उपन्यास है क्योंकि इसमें ~~चित्रित~~ 'मेरीगंज' भारत के संपूर्ण गांवों को प्रतिनिधित्व प्रदान करने की क्षमता रखता है।

'मेरीगंज' गाँव बिहार के पूर्णिया जिले में स्थित है। उपन्यास में गाँव की नारकीय स्थिति और जनता की चेतना का भली भाँति अंकन किया गया है। इसे निम्न बिंदुओं के अंतर्गत समझा जा सकता है -

(क) गाँव में व्याप्त वर्ण व्यवस्था जिसमें चमार टोला, राजपूत टोला, ठकुर टोला आदि हैं। जाति के आधार पर बंटे यह ~~बॉक्स~~ टोले गांवों की विद्रूप जाति

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान
कुछ न लिखें।
(Please don't wri
anything in this

व्यवस्था को प्रदर्शित करते हैं।

(ख) ऊँची जाति के लोगों का प्रभुत्व गाँव के संसाधनों एवं जमीन पर है जो प्रायः देखा जाता है।

(ग) संथालों की दयनीय स्थिति, उन्हें उनकी जमीन भी प्राप्त नहीं होती है।

(घ) सरकार का ढुलमुल रवैया एवं गाँव वालों का चेतना एवं जागरूक रहित होना।

(ङ) जब बीमारी फैलती है तो लोग डॉक्टर को दोषी ठहराते हैं।

इस प्रकार मैला आँचल भारतीय गाँवों में व्याप्त अज्ञानता, एवं विषमता को चित्रित करता है जिसके कारण मैला आँचल प्रतिनिधि आंचलिक उपन्यास है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'श्रुति मार्ग के नहीं', 'मुनि मार्ग के अनुयायी हैं।' उनके निबंधों के आधार पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आचार्य शुक्ल हिंदी साहित्य के सबसे सशक्त निबंधकार एवं समीक्षक माने जाते हैं। माना जाता है कि जो स्थान उपन्यासों के क्षेत्र में प्रेमचंद का, नाटक के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद का है वही स्थान निबंधों एवं आलोचना के क्षेत्र में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का है।

आचार्य शुक्ल को श्रुति मार्ग नहीं, मुनि मार्ग का अनुयायी कहा जाता है अर्थात् शुक्ल जी ने अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिये सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास नहीं किया बल्कि नई परंपरा विकसित की। उन्होंने हिन्दी गद्य को अपने चिंतन से वैचारिक परिपक्वता, नई दृष्टि, सूक्ष्म चिंतन पद्धति प्रदान की। उनके बाद एकाएक हिन्दी आलोचना का स्तर

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उठ गया जिसकी भूमि इन्होंने ही रखी थी।

'मुनि मार्ग' का अनुयायी ~~होना~~

दूसरे पक्ष में इस आधार पर कहा जा सकता है कि उनकी विश्लेषण एवं आलोचना पद्धति अत्यंत वैज्ञानिक, निगमनात्मक थी। वे पहले किसी सिद्धांत को रखते थे फिर परत दर परत उसका सूक्ष्म विश्लेषण करते जाते थे। जैसे उनका कथन - 'बैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है' में एक सिद्धांत देकर वे वैज्ञानिक पद्धति से इसका विश्लेषण करते हैं।

शुक्ल जी का इतिहास बोध 'विधेयवादी' है जिस पर अंग्रेजी समीक्षक 'टेन' का प्रभाव है। इसके अनुसार किसी वस्तु या सिद्धांत की व्याख्या जाति, वातावरण और क्षण के आधार पर की जाती है। शुक्ल जी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की समीक्षाओं जैसे भक्ति काल का उद्भव आदि पर विधेयवाद का प्रभाव है।

इस प्रकार शुक्ल जी ने अपने निबंधों में मुनि मार्ग का अनुसरण करण वैचारिक निबंधों को परिपक्वता के चरम बिंदु तक पहुँचाया है अतः कहा जा सकता है कि यदि "निबंध गद्य की कसौटी है तो शुक्ल जी के निबंध, निबंधों की कसौटी है।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'अप्रमाणिकता का संकट' 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की संवेदना का मुख्य पक्ष है।' इस कथन पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक मानव जीवन में निरर्थकता बोध, व्यक्तित्व विखंडन एवं अप्रमाणिकता के संकट को चित्रित करता है। सार्त्र के अनुसार स्व निर्णय न ले पाने से व्यक्ति अप्रमाणिक हो जाता है। इसी अस्तित्ववादी विचार को मोहन राकेश ने 'आषाढ़ का एक दिन' में अनुस्यूत किया है।

अप्रमाणिक होने का अर्थ है जब व्यक्ति का वस्तुकरण हो जाये। जब मनुष्य अपनी अंतरात्मा से निर्णय नहीं लेता है तो वेदना एवं विसंगति बोध का शिकार होता है एवं उसका जीवन अप्रमाणिक हो जाता है।

कालिदास, विलोम, मल्लिका सभी चरित्र किसी न किसी स्थिति में इसी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संकट से जूझ रहे हैं। कालिदास अपने अभावग्रस्त जीवन के सामने सत्ता के लोभ एवं लालच को स्वीकार करना है, चूँकि यह उसका 'स्व' नहीं था अतः वह विसंगति एवं वेदना युक्त जीवन जीता है।

"तुम मेरे कश्मीर का शासक बनने से आश्चर्य हुई थी ? +++ अभावग्रस्त जीवन की वह एक स्वभाविक प्रतिक्रिया थी।"

मल्लिका का चरित्र अन्य चरित्रों की अपेक्षा द्वन्द्व रहित है किंतु वह अपना जीवन कालिदास को समर्पित कर देती है। सार्त्र के अनुसार अपने 'स्व' का त्याग भी अप्रमाणिकता है।

" यद्यपि मैं तुम्हारे जीवन में नहीं रही किंतु तुम मेरे जीवन का अंग सदा बने रहे।"

विलोम मल्लिका से प्रेम करता है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

किंतु उसे मालिका का शरीर तो प्राप्त हो जाता है किंतु भावनाएँ नहीं। अत: वह भी कुंठाग्रस्त होकर जीवन व्यतीत करता है।

इस प्रकार 'अप्रमाणिकता का संकट' आषाढ़ का एक दिन की मूल संवेदना है फलत: सभी चरित्र विसंगति एवं आत्मविश्वास के शिकार हो जाते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundatio

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'स्कंदगुप्त' नाटक की चरित्र-योजना की समीक्षा कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation